प्रातः सभा 24-7-68 ओमशान्ति पिताश्री शिव बाबा याद है?

ओमशान्तिः आज बच्चों को खड़ी-बन्धन पर समझाते हैं। क्योंकि अभी नज़दीक है। बच्चे जाते हैं खड़ी बांधने लिए। अभी जो चीज़ होकर जाती है उनका पर्व मनाते हैं। यह तो बच्चों को मालूम हैआज से 5000 वर्ष पहले भी प्रतिज्ञा-पत्र लिखवाया जाता था। जिसको बहुत नाम दिये जाते हैं। यह है प्रतिज्ञा-पत्र की निशानी। सभी को कहना होता है पवित्र बनने की राखी बांधो। यह भी समझते हो पवित्र दुनिया सतयुग आदि में ही होते हैं। इस पुरुषोत्तम संगम युग पर ही खड़ी का पर्वशुरु हुआ है जो फिर मनाया जावेगा जब भक्ति शुरु होगी। इनको कहा जाता है अनादी पर्व। वह भी कब से शुरु होता है। क्योंकि सतयुग में यहसपर्व आद होते ही नहीं। यह होती ही है यहां। जो त्योहार आदि इस संगम युगपर होते हैं वह फिर भक्ति मार्ग सेशुरुहोती है। सतयुग में कोई भी त्योहार आदि होती ही नहीं। तुमकहेंगे दीपमाला होगी। नहीं। वह भी यहां मनाते हैं। वहां नहीं होती है। जो यहां मनाते हैं वह सतयुग में नहीं मनाते हैं। अभी यह कैसे मालूम पड़े कि यह राखी क्यों बांधी जाती है। तुम सभी को राखी बांधते हो कहते हो पावन बनो। क्योंकि अभी बाप पावन दुनिया स्थापन कर रहे हैं। त्रिमूर्ति के चित्र में भी लिखा हुआ है ब्रह्मा द्वारा पावन दुनिया की स्थापना होती है। इसलिए पवित्र बनने लिए राखी बन्धन मनाया जाता है। अथवा बच्चों से प्रतिज्ञा-पत्र लिखवाया जाता है। यहां है प्रैक्टीकल की बात। जो फिर भक्ति-मार्ग में त्योहार के रूप में मनाया जाता है। अभी है ज्ञान-मार्ग का समय। तुम बच्चों को समझाया गया है भक्ति की बात कोई भी सुनावे तो उनको समझाना चाहिए हम अभी ज्ञान-मार्ग में हैं। ज्ञान सागर एक ही भगवान है जो सारी दुनिया को निर्विकारी बनाते हैं। भारत वायसलेस था तो सारी दुनिया वायसलेस थी। भारत को वायसलेस बनाने से सारी दुनिया वायसलेस बन जातीहै। भारत को वर्ल्ड नहीं कहेंगे। भारत तो एक खण्ड है वर्ल्ड में। बच्चे जानते हैं पुरानी दुनिया में सिर्फ एक भारत खण्ड ही होता है। भारत खण्ड में जरूर मनुष्य भी रहते होंगे। भारत सच्चखण्ड था। सृष्टि की आदि में देवता धर्म ही था। उनको कहा ही जाता है निर्विकारी पवित्र धर्म। उनको 5000 वर्ष हुये। अभी यह पुरानी दुनिया बाकी थोड़ी रोज है। 5000 वर्ष में मास, दिन, घंटे, सेकण्ड का हिसाब निकालेंगे तोउन से कुछ मतलब निकलेगा। कितना दिन वायसलेस वर्ल्ड बनने में लगते हैं' टाईम तो लगता है ना। यहां भी कितना पुरुषार्थ करते हैंपवित्र बनने परन्तु पवित्र रह नहीं सकते हैं। सबसे बड़ा उत्सव भी यह है। प्रतिज्ञा करनी चाहिए बाबा हम पवित्र जरूर बनेंगे। यह उत्सव सब से बड़ा समझना चाहिए। सभी पुकारते भी हैं हे परमपिता। यह कहते हुये भी परमपिता बुधि में नहीं आता। तुम बच्चे अभी समझते हो परमपिता आते हैं जीवात्माओं को ज्ञान देने। ऐसे नहीं कहेंगे कि आत्माओं को ज्ञान देनेआते हैं। उनको अपना शरीर तो है नहीं। परमपिता आते हैं जीवात्माओं को ज्ञान देने। आत्मायें परमात्मा अलग रहे बहुकाल ... यह मेला इस संगम युग पर ही होता है। कुम्भ का मेला भी इसको ही कहा जाता है। जो हर 5000वर्ष में एक ही बार होता है। वह पानी में स्नान करने का मेला तो अनेक बार मनाते आये हैं। वह है भक्ति मार्ग। यह है ज्ञान मार्ग। इस संगम को भी कुम्भ कहा जाता है। वह है झूठा कुम्भ। तीन नदियां वास्तव में है नहीं। गुप्त नदी पानी को कैसे सकती। कितने मुर्ख बुधि बन जाते हैं। बिल्कुल ही नानसेन्स गपोड़े हैं। बाप बैठ समझाते हैं तुम्हारा यह ज्ञान गुप्त है। तो भी समझाया जाता है। तुम योगबल से विश्व की बादशाही लेते हो। इसमें कोई नाचन्तमाशा आद कुछ भी नहीं है। वह भक्ति मार्ग पूरा आधा कल्प चलता है। और यह ज्ञान चलता है एक लाईफ। सतयुग त्रेता में है ज्ञान का प्रारब्ध। ज्ञान नहीं चलता है। भक्ति तो द्वापर कलयु से चला आई है। ज्ञान सिर्फ एक ही बार मिलताहै फिर इसको प्रारब्ध 21 जन्म मिलती है। वह लोग जो कहते हैं वह सफेद झूठ। अभी तुम्हारी आंखें खुली है। आगे तो तुम अज्ञान नींद में थे। अभी राखी बन्धन पर ब्राह्मण लोग राखी बान्धते हैं। तुम भी ब्राह्मण हो। वह है कुख वंशावली, तुम हो मुख वंशावली। भक्ति मार्ग में कितने अन्धश्रधालु हैं। दूबण में फंसे हुये हैं। दुबण में पांव फंस पड़ता है। तो भक्ति मार्ग भी दुबण है जिसमें मनुष्य फंस जाते हैं।

ताकि एकदम गले तक आ जाते हैंतब फिर बाप भी आते हैं बचाने। बाकी जाकर सिर रहतो है। पकड़ने लिए तो चाहिए ना। अभी बन्दर बुधि मनुष्य खड़ी बन्धन का भी अर्थ समझते नहीं हैं। बच्चे बहुतमेहनत करते हैंसमझाने की। करोड़ों मनुष्य हैं। एक एक पास जानामेहनत लगती है। तुम्हारी बदनामी अखबारों द्वारा ही हुई है। यह भगाते हैं घर-बार छुड़ाते हैं। बहन-भाई बनाते हैं। अभी कहते हैं कृष्ण ने भगाया। तुम भागे थे ना। सिंध से करांची में गये। तुम कंस पुरी में थे। यह हो गया होवनहार कृष्ण। चित्र में दिखाते हैं ना यह स्वर्ग में आने वाला है। तो कंस पुरी से कृष्ण भागा। रावण पुरी से अभी तुम अभी राम पुरी में जाने वाले हो। दिखाते हैं भगाया। पटरानी बनाया तो जरूर पटराने भी होंगे ना। उन्हों को भी भगाया होगा। तो शुरु की बात कितनी फैल गई है। अखबारों में धम धम मचगई थी। अभीरकर क को तुम समझा नहीं सकती हो। फिर तुमको यह अखबारें ही काम आवेंगी। अखबारों द्वारा ही तुम्हारा नाम निकलेगा। अभी देरी भी है। क्या करें जो सभी समझेरखड़ी बन्धन का अर्थ क्या है। जब कि बाप आये हैं पावन बनाते हैं तब उसने प्रतिज्ञा ली है। पतितों को पावन बनाने वाले ने राखी बांधी होगी। प्रतिज्ञा ली होगी। यह राखी बन्धन प्रतिज्ञा की निशानी है। भक्ति मार्ग में जो भी उत्सव हैं सभी उस संगम समय के ही हैं। सतयुग का एक भी नहीं। अभी कृष्ण का जन्म मनाते हैं, फिर जरूर गद्दी पर बैठा होगा। कारवनेशन कब दिखाते नहीं हैं। सतयुग आदि में जो ल०ना० थे उनका कारोनेशनहुआ होगा। प्रिन्स का जन्म मनाते हैं फिर कारवनेशन कहां है। दिवाली कारोनेशन पर होती है। बड़ा भभका होता है। वह है सतयुग का। संगम की जो बात है वह वहां नहीं होती। घरघर में सोझरा यहां होने का है। वहां दीपमाला आद नहीं मनाते। वहां तो आत्माओं की ज्योत जगीहुई है। वहां फिर कारोनेशन मनाया जाता है। न कि दीपमाला। जब तक आत्माओं की ज्योत न जगी हैवापस जानहीं सकती। तो अभी यह जो पतित है सभी को पावन बनाने लिए सोच करना है। बच्चे सोच कर जाते हैं बड़े2 आदमियों पास। बच्चों की बदनामी हुई है अखबारों द्वारा। फिर नाम भी इन द्वारा ही होगा। थोड़ा पैसा डालो तो अच्छा डालेंगे। नहीं तो भूं2 करेंगे। अभी तुम पैसे कहां तक बैठ देंगे। पैसा देना भी रिश्वत है। बेकायदे हो जाता है। आजकल तो रिश्वत बिगर काम नहीं होता। तुम भी रिश्वत दो, बन्दर लोग भी रिश्वत दे तो दोनो एक हो जाय। तुम्हारीसारी बातें है योगबल की। योगबल भी इतना चाहिए जो तुम कोई से काम करा सको। ज्ञान का बल तो तुम्हारे में है। यह चित्र आद ज्ञान है। योग गुप्त है। अपन को आत्मा समझ बाप को याद करना है। बेहद का वरसा लेने लिए। वह है ही गुप्त। जिससे तुम विश्व का मालिक बनते हो। कहां भी बैठे तुम याद कर सकते हो। सिर्फ यहां बैठकर योग नहीं साधना है। ज्ञान और याद दोनो सहज है। सिर्फ सात दिन का कोर्स लिया बस। जास्ती की दरकार नहीं रहती। फिर जाकर तुम औरों को आप समान बनाओ। बाप ज्ञान का भी सागर हैशान्ति का भी सागर है। यह दो बातें हैं मुख्य। इन से तुम शांति का वरसा ले रहे हो। आत्मा भी पवित्र बन जाती है। यह सभी समझने की बातें हैं। इसमें शास्त्र आद की दरकार नहीं। जिन्होंने भक्ति की है उन्हों को शास्त्र गीता आद याद आवेंगे। वास्तवमें गीता भी याद न आनी चाहिए। यहां कोई भी शास्त्र है नहीं। याद भी बड़ी सूक्ष्म है। तुम बच्चे भल बाहर में चक्र लगाओ। बाप को याद करो और84 का चक्र। इससे सारा ज्ञान बुधि में आ जाता है। पवित्र बनना है, दैवी गुण धारण करना है। कोई भी अवगुण न होना चाहिए। बाप कहते हैं मेरे खातीर अभी तुम पतित बनो। भल स्त्री सामने हो, तुम अपन को आत्मा समझ बाप को याद करो। देखते हुये भी न देखो। हम तो अपने बाप को ही देखते हैं। जैसे आत्मा को समझते हो वैसे परमपिता परमात्मा को भी समझते हो। देखते नहीं हो। कई तो जानते भी नहीं हैं। हां इतना समझते हैं आत्मा बहुत छोटीएक स्टार मिसल है। तो बाप भी इतना ही छोटा होगा। वह ज्ञान का सागर है तुमको आप समान बनाते हैं। तो तुम भी ज्ञान सागर बनते हो। इसमें मुंझना न चाहिए। वह है परमपिता। नाम तो आत्मा ही हैपरन्तु परमधाम में रहते हैं इसलिए कहा जाता है परम। वह तो तुम भी रहते हो। अभी नम्बरवार पुरु०अनुसार तुम ज्ञान ले रहे हो। पास विथ

आनर जो होते हैं उनको कहेंगे पूराज्ञान सागर बने हैं। बाप भी ज्ञान का सागर तुम भी ज्ञान का सागर। आत्मा कोई छोटी बड़ी नहीं होती। परमपिता परमात्मा भी कोई बड़ा नहीं होता। यह जो कहते हैं हजारों सूर्यों से तेजोमय ... यह सभी हैं गपोड़े। बुधि में जिस रूप से याद करते हैं वह सा० होता है। गणेश का चित्र उठा उठा कर उस रूप में याद करते हैं तो वह सा० होता है। बाकी है कुछ भी नहीं। सा० की जरूरत भी नहीं है। इसमें समझ चाहिए। आत्मा का सा० या परमात्मा का सा० बात एक ही हो जावेगी। यह सभी समझने की बातें हैं। बेसमझ से समझदार बनना है। यह भी तुम बच्चों को समझ हुई है हम जीवात्माओं को बाप का परिचय मिला है। किसने दिया? बाप ने। बाप कहां है? उनका रूप बताओ। कहेंगे जैसे आत्माओं का वैसे बाप का रूप है। बाप ने रियलाईज कराया है। मैं ही पतित पावन ज्ञान का सागर हूं। समय पर आकर सभी की सद्गति करता हूं। यह बेसमझ ठहरे ना। समझ और बेसमझ का खेल है। समझदार (देवताओं को) को बेसमझ माथा टेकते हैं। सबसे जास्ती पूजा होती है शिव बाबा की। जो अभी तक चल रही है। सबसे जास्ती तुम ने भक्ति की है। फिर बाप तुमको ही पढ़ाते हैं। भक्ति में तुम महिमा करते थे। अभी कहेंगे प्रेक्टीकल में ज्ञान का सागर है। हमको पढ़ा रहे हैं। फिर सतयुग में हम प्रारब्ध पावेंगे। खड़ी बन्धन के बाद होती है कृष्णजन्माष्ठमी। फिर है दशहरा। वास्तव में दशहरा के पहले तो कृष्ण आ न सके। दशहरा पहले होना चाहिए। फिर कृष्ण आना चाहिए। यह हिसाब भी तुम निकालेंगे। पहले तो तुम कुछ भी नहीं समझते थे। अभी बाप कितना समझदार बनाते हैं। बेसमझ को टीचर समझदार बनाते हैं। तुम पहले कुछ भी नहीं जानते थे। अभी तुम समझते हो भगवान बिन्दी है। झाड़ कितना बड़ा है। आत्मायें ऊपर में बिन्दी रूप में रहती हैं। मीठे2 बच्चों को समझाया जाता है वास्तव में एक सेकण्ड में समझदार बनना चाहिए परन्तु पत्थर बुधि ऐसे हैं समझते ही नहीं। नहीं तो है ही एक सेकण्ड की बात। हद का बाप तो जन्म व जन्म नया मिलता है। यह बेहद का बाप तो एक ही बार आकर2। जन्मों का वरसा देते हैं। अभी तुम समझते हो बेहद के बाप से बेहद का वरसा मिलता है। आयु भी बड़ी हो जाती है। ऐसे भी नहीं 2। जन्म कोई एक ही बाप रहेगा। नहीं। तुम्हारी आयु बड़ी हो जाती है। तुम कब दुःख नहीं देखते हो। पिछाड़ी में तुम्हारी बुधि में यह ज्ञान जाकर रहेगा। बाप को याद करना है और वरसा लेना है। बस बच्चा पैदा हुआ और वारिस बना। बाप को जाना तो बस बाप और वरसे को याद करो। पवित्र बनो। दैवी गुण धारण करो। बाप और वरसा कितना सहज है। एक आबजेक्ट भी सामने हैं।

अभी बच्चों को विचार करना है हम अखबारों द्वारा कैसे समझावें। त्रिमूर्ति भी देना पड़े। क्योंकि समझाया जाता है ब्रह्मा द्वारा स्थापना। ब्राह्मणों को पावन बनाने बाप आया है। इसलिए राखी बांधी जाती है। पतित-पावन बाप भारत को पावन बना रहे हैं। हरेक को पावन बनना है। क्योंकि अभी पावन दुनिया स्थापन होती है। अभी तुम्हारे 84 जन्म पूरे हुये। जिसने बहुत जन्म लिये होंगे वही अच्छी रीत समझते रहेंगे। पिछाड़ी में आने वालों को इतनी खुशी नहीं होगी। क्योंकि कम भक्ति की है। भक्ति का फल देने बाप ही आते हैं। भक्ति किसने जास्ती की है यह तुम अभी समझते हो। पहले नम्बर में तो तुम ही आये थे। तुमने ही अव्यभिचारी भक्ति की है। तुम ही अपने से पूछो हमने जा तो भक्ति की है या इसने। सब से तीखे जो सर्विस करते हैं जरूर भक्ति भी जास्ती की होगी। बाबा नाम तो लेते हैं। कुमारका है, जनक है, मनोहर है, गुलजार है। नम्बरवार तो होते हैं ना। यहां तो नम्बरवार बिठाये नहीं सकते हैं। तो विचार करना है खड़ी बन्धन का अखबार में कैसे डालें। वह तो ठीक है मिनिस्टर आद पास जाते हो, खड़ी बांधते हो, परन्तु पवित्र तो बनते नहीं हैं। तुम कहते भी हो पवित्र बनो। तो पवित्र दुनिया स्थापन हो जाये। 63 जन्म गठर में पड़े हो अभी बाप कहते हैं इस अन्तिम पवित्र बनो। अभी समझो जाकीरहुसैन पास जावेंगे उनको भी समझावेंगे खुदा गार्डेन आफ फ्लावरस स्थापन कर रहे हैं। अभी पावन बनना है। खुदा को याद करो तो जो तुम्हारे सिर पर पाप है वह उतर जाये। अखबार में भी डालना है। बड़े अखबार में तो पैसे लेते हैं। अच्छा मीठे2 बच्चों को याद प्यार गुडमार्निंग और नमस्ते।